SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

जनभाषा छत्तीसगढ़ी और कुडुख के कृषि शब्दावली का सांस्कृतिक अध्ययन

हितेश कुमार, (Ph.D.), साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला,
शंकर लाल कुँजाम, प्रशाासनिक विभाग,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
हितेश कुमार, (Ph.D.),
साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला,
शंकर लाल कुँजाम, प्रशाासनिक विभाग,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/09/2021
Revised on : -----
Accepted on : 30/09/2021
Plagiarism : 00% on 23/09/2021

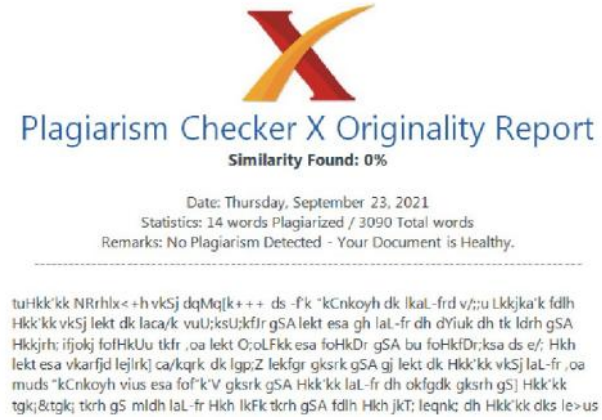
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Thursday, September 23, 2021
Statistics: 14 words Plagiarized / 3090 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

tuHkk'kk NRrhlx< +h vkSj dqMq[k+++ ds -f'k "kCnkoyh dk lkaL-frd v/;;u Lkkjka'k fdlh Hkk'kk vkSj lekt dk laca/k vuU;ksU;kfJr gSA lekt esa gh laL-fr dh dYiuk dh tk ldrh gSA Hkkjrh; ifjokj fofHkUu tkfr ,oa lekt O;oLFkk esa foHkDr gSA bu foHkfDr;ksa ds e/; Hkh lekt esa vkarfjd lejlrkj ca/kqrk dk lgp;Z lekfgr gksrk gSA gj lekt dk Hkk'kk vkSj laL-fr ,oa muds "kCnkoyh vius esa fof'k'V gksrk gSA Hkk'kk laL-fr dh okfgdk gksrh gS] Hkk'kk tgk;&tgk; tkrh gS mldh laL-fr Hkh lkFk tkrh gSA fdlh Hkh jkT; leqnk; dh Hkk'kk dks le>us

शोध सार

किसी भाषा और समाज का संबंध अनन्योन्याश्रित है। समाज में ही संस्कृति की कल्पना की जा सकती है। भारतीय परिवार विभिन्न जाति एवं समाज व्यवस्था में विभक्त है। इन विभक्तियों के मध्य भी समाज में आंतरिक समरसता, बंधुता का सहचर्य समाहित होता है। हर समाज का भाषा और संस्कृति एवं उनके शब्दावली अपने में विशिष्ट होता है। भाषा संस्कृति की वाहिका होती है, भाषा जहाँ–जहाँ जाती है उसकी संस्कृति भी साथ जाती है। किसी भी राज्य समुदाय की भाषा को समझने के लिए उस राज्य समुदाय की संस्कृति, सभ्यता, परिवेश, जीवनशैली को समझना जरूरी है।

छत्तीसगढ़ के ग्रामीणों का जनजीवन मूलतः कृषि पर आधारित होता है। कृषि ग्राम्य जीवन का आधारस्तंभ एवं प्राणवायु होता है। कृषि पर आधारित ग्रामीण जनमानस के बीच अनेक लोकगीत, लोकोक्ति, मुहावरा उनके कंठ में रचा–बसा होता हैं, उनके हृदय में कृषि शब्दावली का भंडार भरा होता है। किसी भाषा की प्राचीनता को समझने में शब्दावली का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। छत्तीसगढ़वासियों में छत्तीसगढ़ी और कुडुख़ की बोली/भाषा को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण योगदान साबित होगी। छत्तीसगढ़ी और कुडुख़ में भी इसकी इतनी ही सार्थकता है जितनी अन्य भाषा और बोली में है। प्रस्तुत शोध–पत्र में छत्तीसगढ़ी और कुडुख के कृषि शब्दावली का संकलन कर उनका विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो अब विलुप्ति की ओर अग्रसर होता दीख रहा है। शोध– पत्र के माध्यम से छत्तीसगढ़ की भारोपीय भाषा परिवार की प्रमुख भाषा छत्तीसगढ़ी और द्रविड़ परिवार की भाषा कुडुख को जनमानस तक पहुँचाना एवं विश्वपटल पर रखकर उनकी महत्ता को सिद्ध करना होगा। समय के साथ नए–नए आविष्कार एवं नए कृषि

यंत्र के उपयोग के कारण इन शब्दों के प्रयोग से विलुप्त हो रही कृषि शब्दावली का प्रलेखन कर नई पीढ़ी के मानस–पटल पर रखना एवं उनके संस्कृति से अवगत कराना है।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़ी, कुडुख़, कृषि शब्दावली, संस्कृति, लोकगीत, लोकोक्ति.

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है। यहाँ की अधिकांश जनता कृषि पर निर्भर है। इतिहास के पृष्ठों में छत्तीसगढ़ का वैभव, ऐश्वर्य एवं सांस्कृतिक उत्थान का विशद् वर्णन मिलता है। इस अंचल में विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों, एवं धर्मों के लोग निवास करते आ रहे हैं। छत्तीसगढ़ न केवल गहनगर्भी सामासिक संस्कृति का प्रदेश है, प्रत्युत छत्तीसगढ़ भारत में प्रचलित अन्यान्य भाषा–गोष्ठियों की अद्भूत संगम–स्थली भी है। छत्तीसगढ़ की भाषाई विविधता में जटिलता नहीं सुगमता और समरसता है। छत्तीसगढ़ में चार भाषा–परिवारों की भाषाएँ/बोलियाँ बोलने वाले लोग निवास करते हैं, वे हैं– आर्य, द्रविड़, आग्नेय और तिब्बती–चीनी।

''छत्तीसगढ़ की भाषाई विविधता का कारण यह है कि यह छह भिन्न–भिन्न भाषाई प्रदेशों से घिरा हुआ है। उत्तर में बघेली, भोजपुरी और मगहीय उत्तर–पूर्व में झारखंडी या नागपुरी या सादरी, पूर्व में उड़िया, दक्षिण में तेलुगु, पश्चिम में मराठी तथा उत्तर–पश्चिम में बुंदेली है। इन परवर्ती प्रदेशों से छत्तीसगढ़ का राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं भौगोलिक संपर्क भाषाई संक्रमण से प्रतिफलित हुआ है। यह प्रांत विभिन्न भाषाओं/बोलियों का मात्र क्रीड़ा–स्थली नहीं, अपितु इसकी भाषा/बोलियाँ भी उनसे प्रभावित रही हैं।''[1]

धन्य धन्य ए धरती है, जिसमें कौशिल्या ने जनम लिया।
सीता का वनवास हुआ तो इस माटी ने शरण दिया।।
वीरनारायण की वीरभूमि, गुरु घासीदास की वाणी है।
सुंदरलाल के अंतस में महानदी का पानी है।।
खूबचंद बघेल चन्दूलाल जैसे अनगिनत सपूतों का सपना।
छत्तीसगढ़ आकर देखो जीवन सफल करो अपना।।

'रामायण', 'महाभारत' काल का साक्षी रहा छत्तीसगढ़ राज्य आज वैश्विक गुलदस्ते में धान की बाली के रूप में अपना अमिट छाप दर्ज कर चुका है। जंगल, पहाड़, नदियाँ, वन्य प्राणियों से अलंकृत, सांस्कृतिक वैभव से परिपूर्ण यह प्रदेश 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश से विभाजित होकर अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के साथ भारत के 26वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।

छत्तीसगढ़ी अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित पूर्वी हिंदी की एक बोली है, एवं अर्धमागधी की पुत्री और अवधी की सहोदरा है। छत्तीसगढ़ी छत्तीसगढ़ राज्य की जनभाषा एवं राजभाषा है। छत्तीसगढ़ी जनभाषा छत्तीसगढ़ के जनमानस के व्यवहार को व्यक्त करता है।

छत्तीसगढ़ी अंतरवर्तनी बोलियों से सामंजस्य स्थापित करती है। जबकि कुडुख़, कुडुख़ जनजाति की मातृभाषा है एवं इनका अन्य नाम उराँव या ओराँव भी है। कुडुख़ उत्तरी द्रविड़ वर्ग की भाषा है। छत्तीसगढ़ में कुडुख़–भाषी मुख्यतः सरगुजा, जशपुर के अलावा रायगढ़ और बिलासपुर जिलों में निवास करते हैं। साथ ही सीमावर्ती झारखंड एवं ओडिशा में ये बहुतायत मे हैं। "द्रविड़ परिवार की भाषा होने के कारण कुडुख़ में मूलतः तमिल और कन्नड़ भाषा के शब्द ध्वनि परिवर्तन के रूप मे मिलते हैं, तथा अन्य भाषा और बोलियों से संपर्क में आने के कारण उसमें छत्तीसगढ़ी, नागपुरी या सादरी तथा उड़िया शब्दों का आगमन हुआ है।"[2]

इस अंचल की संस्कृति एवं जीवनशैली का परिचय प्राप्त किए बिना छत्तीसगढ़ी एवं कुडुख़ जनभाषा के वास्तविक रूप का ज्ञान लगभग असंभव है। किसी भी संस्कृति को बचाने के लिए उसके भाषा को जीवंत रखना

जरूरी है और भाषा को जीवंत एवं समृद्ध रखने के लिए उसकी मूल शब्दावली को संरक्षित/व्यवहृत करना आवश्यक है। ग्रामीण जनमानस में कृषि शब्दावली की प्रधानता है, उनके सामान्य दिनचर्या में कृषि शब्दावली स्पष्ट परिलक्षित होता है। छत्तीसगढ़ में त्यौहारों का श्रीगणेश, अक्ती और हरेली पर्व से ही होता है, जो कि कृषि–दर्शन और उनके उपकरण पर आधारित परंपरा एवं मान्यता का निवर्हन करते हुए पूजा–अर्चना किया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण किसानों के जीवन में कृषि एवं उनके उपकरण का कितना गहरा नाता है। ग्रामीणों में यह भी देखा जाता है कि उनके सुख–दुख, पर्व–त्यौहार उनके फसल की पैदावर पर निर्भर करता है। फसल अच्छा हुआ तो त्यौहार का स्वरुप धूमधाम से होता है। कोई भी राज्य जो कृषि प्रधान है, वहाँ मुख्य भाषा की मौलिकता से परिचित होने के लिए, संस्कृति से जुड़ाव के लिए, वहाँ के जनमानस के अंतस के भाव को समझने के लिए, कृषि शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि ग्रामीणों के मानस–पटल पर सबसे ज्यादा कृषि शब्दावली ही प्रभावी होता है। किसी भी भाषा में शब्दावली के विलुप्त होने का कारण सिर्फ यह नहीं है कि उनके बोलने वाले कम हो गए हों, उसका एक कारण समय के साथ नए–नए यंत्र का आ जाना भी है। छत्तीसगढ़ का किसान हल चलाकर छत्तीसगढ़ महतारी का आशीर्वाद प्राप्त कर अन्न का प्रासन कर, जतन एवं उपार्जन करते हैं। यह अन्न ही शक्ति, प्रेरणा, बल, आत्मविश्वास और सभी कार्यों को सिद्ध करने वाला है।

कृषि जीवन में सुबह से लेकर रात्रि तक जुड़े रहने के कारण यहाँ की जनमानस में उनकी संस्कृति का छाप लोकगीत, लोककथा, लोकोक्ति, मुहावरा के माध्यम से स्पष्ट परिलक्षित होता है।

सुप्रसिद्ध मानवविज्ञानी डॉ. डी.एन. मजुमदार ने संस्कृति को परिभाषित करते हुए कहा है: "संस्कृति के अंतर्गत मनुष्यों की रीति–नीति, लोक विश्वास, आदर्श, कलाएँ तथा मानव द्वारा उपलब्ध समस्त कौशल एवं योग्यताओं को लिया जा सकता है।"[3]

हल संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	कुडुख़	विवरण
नांगर	उगता	सिंचाई करने हेतु बनाए गए लकड़ी का कृषि उपकरण
ओनारी	पन्ना उगता	नाली नूमा उपकरण जिसमें बीज जमीन पर नीचे आते हैं
अकरस जोताई	खटरी उईना	ग्रीष्मकालीन जुताई
अकरस बोआई	हैका चाहता	ग्रीष्मकालीन बोआई
ओन्हारी	–	विशेष प्रकार के हल से बोई जाने वाली फसल
मुठिया	मुठिया	हल को पकड़ने का वस्तु
चिपा	दाब	लंबवत लकड़ी में लगने वाले छोटा लकड़ी
मेंर्रा	उसांगी	बियासी करने वाले हल के लोहा भाग में लगा हुआ चूड़ा
चिमटा	दाब	हल में लोहा लगाने वाले उपकरण
नास	उसांगी	जमीन खोई या जोंताई करने का लोहा
डांड़ी	–	हल का मुख्य भाग जिसके माध्यम से हल कार्य पूर्ण किया जाता हैं
कोप्पर	पटा	उबड़–खाबड़ जमीन को समतल करने वाले विशेष हल या उपकरण
जोंता	जोत्ता	जुड़ा में बैलों को फाँदने की रस्सी
नांहना	बंधनी	जुड़ा को हल से जोड़ने की लंबी रस्सी
पंचारी	पगसी	जुड़ा और बैलों को एक साथ बाँधने का लकड़ी

जोंताई संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	कुडुख़	विवरण
जोंतना	गोहला उईना	हल चलाना
जोंतई	उईताना	हल चलाने, किसी को कार्य में प्रवृत्त करने
जोंतउर	बंधनी	हल, गाड़ी इत्यादि के जुड़े से बैल को फाँदने की रस्सी
जोंतवइया	गोहला उय्मू	हल चलवाने वाला
जोंतवाना	गोहला उईना	हल चलवाना
कुँड़	डहना	हल चलाने से बना हुआ छोटा नाला आकार
हरिया	आतरी	हल चलाने के लिए निश्चित माप
आँतर	पड़िया	हल चलाते समय छूटा हुआ भाग

कृषि उपकरण संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	कुडुख़	विवरण
नांगर	उगता	हल
कोप्पर	पटा	समतल करने वाले कृषि उपकरण
तुतारीलउठी	आरची	लोहे के कील लगा हुआ लाठी
कलारी	कलारी	धान आदि के पुवाल अलग करने के उपकरण
दँतरी	अच्चो	भूसा आदि अलग करने के उपरण
रापा	कुड्डी	मिट्टी को काटने या एक स्थान से दूसरे स्थान करने में सहायक उपकरण
गैंती	गैंती	खेत या डोली आदि के सँकरी भाग का खोदाई करने का लोहे का उपकरण
गाड़ा	गाड़ा	फसल आदि को ढुलाने का परिवहन
बेलन	–	मिंजाई करने का गोल आकार वाले गाड़ी
बीजबोनी	चाँटुंकी	बीज रोपण करने का टोकरी
हँसिया	तांतर	फसल आदि काँटने का उपकरण
डोर	ऐप	भरती आदि बाँधने का बड़ा रस्सी

बैलगाड़ी संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	कुडुख़	विवरण
गाड़ा	मनहां गाड़ी	फसल आदि ढुलाने का वाहन
जुंड़ा	पगसी खुंटा	बैलों को फांदने का मोटा लकड़ी
डाड़ी	मुसडा	गाड़ी के दोनों ओर लगने वाले मोटा या लंबा लकड़ी
सुमेला	रींग	जुंड़ा के दोनों ओर लगने वाले लोहा
सुमेलाडोरी	–	जुंड़ा के दोनों ओर लगने वाले लोहे की रस्सी
धूरा	–	गाड़ी का अग्र भाग
धूरी	कंक	टेकाने का उपकरण
टेकनी	–	टेकाने का उपकरण
उल्ला	भग्गे	गाड़ी में अधिक भरती होने की दशा या स्थिति
पछाटी	मुसड़ा	गाड़ी के पीछे भाग के नीचले हिस्से में लगने वाली लकड़ी

चलपटनी	पाटी	कमचिल को चाल कर रखने वाले चौड़ा लकड़ी
खूँटा	खूंटा	गाड़ी के आजू – बाजू में लगने वाली पतली लकड़ी
असकुड़	–	पहिया लगाने का लोहा
धोखर	–	पहिया के अग्र भाग में लगने वाली लकड़ी
जुंड़ा डोरी	जोड़ा	जुंड़ा बाँधने की रस्सी
धुरखीला	–	गाड़ी डाड़ी के अग्र भाग में लगने वाले कील
कनखीली	–	आसकुड़ के दोनों छोर में लगने वाले कील
चक्का	–	गाड़ी या गाड़ा का पहिया

अनाज भंडार संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख**	**विवरण**
कोठी	कुठ्ठी	अनाज रखने का भंड़ार कक्ष
माईकोठी	कोहां कुठ्ठी	अनाज रखने का बड़ा भंड़ार कक्ष
पउला	मोड़ा	अनाज या दाल रखने का छोटा भंड़ार
काठा	तामी	अनाज नापने का पात्र (4 पईली का 1 काठा)
पईली	पइला	अनाज नापने का छोटा पात्र (1 किलोग्राम के बराबर)
पवा	मान	अनाज नापने का छोटा पात्र (4 पावा का 1 किलोग्राम)
फोहई	–	अनाज नापने का छोटे से छोटे पात्र जो पईली से भी छोटे होते है (पावा का आधा हिस्सा)
बोरी	बोरी	अनाज रखने का छोटा थैला
बोरा	बोरा	बीस काठा अनाज रखने वाले बड़ा थैला
कट्टा	बोरा	बोरा का आधा मात्रा में अनाज रखे वाला थैला
चुंगड़ी	बोरा	बोरी का बड़ा रूप वाला थैला

बुआई संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
बोआना	खेस्से चाँहना	बीज रोपण करवाना
बोअई	चांहना	बीज रोपण करने का क्रिया या भाव
परहा	रोपा	बीज रोपण किया गया छोटे पौंधा को पुनः रोपण करना
लाईचिपी	लेवा चाँहना	कीचड़ युक्त भूमि में या पानी भरे हुए भूमि में बीज रोपण करना
उतेरा	जरया खेस्से चाँहना	बीजों को अंकुरित करने के बाद छिड़काई करना
बेता	छिटना	बीजों को छिड़ा विधि से रोपण करना

कटाई संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
लुवई / लुअई	होयना	फसल काटने का क्रिया या काम
लुवइया	हेस्से खुमुस	फसल काटने वाला
करपा	कटी	फसल का कटा हुआ पुवाल
भारा	कटी	फसल का कटा हुआ पुवाल का बीड़ा
भारा बाँधना	काबा	पुवाल को बीड़ा बनाना

खरही	हेस्से गाँज	कटे हुए फसल का ढेर
बोझा	कुम्मना	सिर पर रखने योग्य बोझ
खेप	ओन खेप	गाड़ी या मनुष्य का एक बार का बोझ
खरही ओदारना	छिटना	पुवाल के ढेर को गिराना

सिंचाई से संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
पलोना	अम्मू पटाना	कृषि भूमि में पानी चलना
भरना	नींदना	कृषि भूमि में पानी चलाने का ऋण
नरवा	हाड़	बड़ा नाला
झोरी	पझरारना	छोटा नाला जिसमें सदैव पानी झिरता रहता हैं
फाल	अम्मू चाड़ना	नाला में पानी के गति तेज करने वाले उभरा हुआ भाग
मुँही	मुंही	खेत आदि में पानी जाने का प्रवेश द्वार
मेंड़	आड़ी	खेत आदि में पानी रोकने का उभरा हुआ भाग जो चारों दिशा में होते हैं (खेत का घेरा)
मुँही बाँधना	मुंही ऊटना	खेत में पानी जाने के द्वार को बाँधना
बरोना	अम्मू पटा बानआ	खेत आदि में पानी चलाना
छेंका	घोरना	पानी रोकने वाले लकड़ी या मिट्टी का उपरकण
बाँधा	केंहा मुड़ा	पानी रोककर रखने वाले जलाशय

अधुनिक कृषि उपकरण संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
टेक्टर	ट्रेकर	ट्रैक्टर
टाली	डल्ला	ट्राली
पंखा	खेस्से उढियाना पंखा	फसल आदि के पैरा और बीज को अलग करने वाले मशीन
रापा	कुड्डी	मिट्टी को एक स्थान से दूसरे स्थान तक हटाने वाले उपकरण, मशीनी रापा
हारवेस्टर	–	फसल आदि मिंजाई करने वाले बड़ा मशीन

खरपतवार (बन) संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
कोदइला	मड़िया लहटी	कोदो जैसे दिखने वाले बन
संवा	पसड़ी	धान के जैसे दिखने वाले बन
भुंडी	मुंडा	एक प्रकार का बन
केकराबन	ककड़ो लट्टी	केकड़ा के जैसे उगने वाले बन
नूनचर्रा	बेक लट्टी	एक प्रकार का बन
तीनपनिया	तीन अतहा	तीन पत्तों वाले बन
दुधिया	परटा लट्टी	दुध निकलने वाले बन
पोंड़ी	मुण्डली	एक प्रकार का बन

भथुवा	भाथु लट्टी	एक प्रकार का बन
छुबी	दुब्बा लट्टी	दुब नामक बन
कांद	उसमा	बड़े सिर वाले बन
बेंदरपुछिया	लुकई	बंदर के पूछ जैसे बन
सिलिहारी	रंगाई अच्छे	सफेद रंग के फूल वाले बन
गंउहाँ	गंगरवा छतना	गेहूँ जैसे दिखने वाले बन
भोंड़	भुरंडी	एक प्रकार का बन
भेंगरा	लटका	एक प्रकार का हरा पत्तेदार बन

छँटाई/निंदाई से संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
निंदना	चड़ना	विजातिय खरपतवारों को छाँटना
निंदइया	चड़ऊ	छटाई करने वाला
निंदा	लटरी	छँटाई करने के बाद निकला हुआ खरपतवार
निंदा फेंकना	हेबड़ना	छाँटा गया बन को बाहर निकालना

मिंजाई संबंधी शब्द

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
मिंजना	नाबना	मिंजाई करना
मिंजई	नाबल नर	मिंजाई करने का क्रिया या भाव
पेरा डारना	पैरा नाबना	धान का पुवाल जिसे मिंजाई हेतु जमीन पर डाला जाता है
कोड़ियाना	बुसऊ ओथरना	पैरा आदि का अलग करना
ओसाना		भूंसा और बीज को अलग करना
पेर डारना	हेस्से छिंटना	मिंजाई के लिए फसल को तैयार करना
पेरा हेरना	बुसऊ ओथरना	मिंजाई करने के बाद पैरा को निकालना
रास	रास खेंस्से	मिंजाई करने के बाद निकलने वाले बीजों का समूह जिसे ढेर किया जाता है
भूंसा	चींह	मिंजाई करने के बाद निकलने वाले पैरा के पुवाल के छोटे टुकड़े
पिरउसी	खुट्टा	मिंजाई करने के बाद निकलने वाले पैरा के पुवाल के टुकड़े भूंसा की अपेक्षा बड़ा होता हैं
ओसइया		धान भूंसा उड़ाने वाला
धूकना	ऊढ़याना	बीज और भूंसा को अलग करना
बदरा	चींह	ओसाने के बाद निकलने वाले खराब बीज

बीजों से संबंधित

छत्तीसगढ़ी	**कुडुख़**	**विवरण**
धान	खेस्से	धान
गंहूँ	गंहू	गेंहूँ
चना	ओनहारी	चना
काबुली चना	कोहां ओनहारी	बड़े आकार वाले या सफेद रंग के चना
राहेर	रहड़ी	अरहर दाल/दलहन

कोदो सोयाबिन	कोदो सोयाबिन	एक प्रकार के छोटे प्रजाति वाले चाँवल सोयाबिन
बटुरा	बटरा	बटरा
सरसो	मनी	सरसों
उरिद	मासी	उड़द
मूंग	मूंग	मूंग (दलहन की एक प्रजाति)
पटवा	लकरा	पटसन
कुटकी	गुडलू	कोदो से छोटा आकार वाला अनाज
जुवाँर	बजरा	रोटी बनाने का अनाज
उरिद	लड़ग मासी	बेला (नार) में उपजने वाले उड़द
तिवरा	खेटसारी	लाखड़ी
अरसी	तीसी	अलसी
जिल्लो	झिलो	सरसों आकार वाले छोटे दलहन बीज

छत्तीसगढ़ी लोकगीत में कृषि जीवन–शैली का उल्लेख जनमानस में इस रूप में व्याप्त है:

किसानी संबंधित लोकगीत

मोर चलो रे बईला नांगर के
हम टोर कमाबो जांगर रे
धरती मांगे महिनत पानी, जनम जनम के इही कहानी।
हम तो करबो मेहनत संगी...ऽ...ऽ...
पानी के मालिक बादर रे मोर चलो रे...ऽ...ऽ...
माई–पीला जम्मों कमाथन, लहूँ पछीना रोज बोहाथन।
रहिथन हम खुसहाल संगी...ऽ...ऽ..
खाथन पनियर पातर रे मोर चलो रे...ऽ...ऽ....
दिन दिन सरग छूये महगाई, मिहनत आगार खाट कमाई।
सब कुछ बने करे तैं मालिक, पेट बनाय काबर रे मोर चलो रे

(स्वर गायक – स्व. केदार यादव)

छत्तीसगढ़ी लोकगीत–ददरिया में कृषि–दर्शन जनमानस के कंठ में इस रूप में व्याप्त है:

किसानी संबंधित ददरिया

- गेंहू के खेत म ओनारे धनिया, गऊंटी के मरम ला नइ जानै बनिया।
- बिन जोंते रै टूरा परे परिया, चल घरले उठाके आघू ले चरिहा।
- टंगिया के काटे बिंधना के खोले, तैं जाबे पठौनी गली मा रोले।
- गाड़ी ल जोंते सुमेला छाड़े, राजा पहिलीच पठौनी मा बोले ला छांड़े।
- सावन अउ भादो गिरेला पानी, कोन चिरई पीवे पूछी मा पानी।
- बोयेला बीजा फुटेला पीका, मोर नांव के लगाले सिन्दुर टीका।

किसानी संबंधित मुहावरा

- **अरई लगाना** – हाथ धोकर पीछे पड़ जाना।

पटं०: मोहन के ददा ह गोरिया कर ले दस हजार करजा उठय रिहिस हे तेला आज ले नइ पटाय हे। तेकर

सेती गोरिया के बेटा ह मोहन कर निच्चट अरई लगात रिथे।

- **अकरस जोतना** – भविष्य में लाभ के निमित्त कार्य करना।
  पटं०: हमर गांव म मुनेस बरोबर कोनो चउतरा किसान नइ हे। जे थोरको ठेल्हा होथे तहा ले अपन खेत–खार ल अकरस जोत देथे।
- **खेत बढ़ोना** – धान की कटाई समाप्त होने के पूर्व पूजा करना।
  पटं०: कोहलाटोला वाले मंड़ल के धान के लुवई सिरा गे जी, तेकरे तो आज बढ़ोना खा के आए हन।
- **जमीन डोलना**– पैतृक जमीन बिकना।
  पटं०: पूना राम के किसानी बड़ गजब के रिहिस जी फेर ओखर टूरा गिरवर के सियानी ह तो ओखर जमीन डोला के रख दिस।
- **पानी झोरना**– वर्षा होना।
  पटं०: आज तो मोला एको कनिक बिस्वास नइ रिहिस हे, फेर अचानक ले पानी झोर के रख दिस।
- **बनी तियारना**– मजदूरी पर बुलाना।
  पटं०: मोर दाई ह तो धान लुआए खातिर दस झन बनिहारिन ल बनी तियार के आय रिहिस हे फेर सब्बो झन ह धोखा दे दिस।

छत्तीसगढ़ी संस्कृति में कृषि से संबंधित अनेक लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं:

किसानी संबंधित होना

- खातू परय त खेती, नइ ते नदिया के रेती।
  (खातू जेन माटी खातिर पोसक तत्व हे, जब तक खेत मन म नइ पड़य, तब तक उपजाऊ नइ होय। अरथात् नंदिया के रेती के असन हो जाथे।)
- खेती धन के नास, जब खेले गोसइया तास।
  (गोसइया अदि खूद तास–जुआ खेले ल धर लिहीं त खचित ही किसानी अउ धन–दउलत नास हो जथे।)
- नांगर के न बक्खर के, दँउरी म बजरंगा।
  (कोड़िहा बइला नांगर चलाय म काम नइ करँय, फेर दँउरी जेमा भरपूर खाय ल मिलथे, जेमा बजरंगा जइसन बुता करथे।)
- कलजुग के लइका करँय कछेरी, बुढ़वा जोंतय नांगर।
  (कलजुगी लइका मन खूद के कछेरी के बुता–काम करथे अउ बुढ़वा ददा ह नांगर जोंते के बुता करथँय।)
- तेल फूल म लइका बाढ़े, पानी म बाढ़ै धान।
  खान–पान म सगा कुटुम्ब, करवैना बढ़े किसान।
  (तेल–फूल ले लइका बाढ़थे, पानी ले धान बाढ़थे। खाय–पीये ले कुटुम्ब बाढ़थे, अउ मेहनत करे ले किसान बाढ़थे।)

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ी की बहुचर्चित लोकप्रिय गीत के रूप में उभरा कोई भी गीत, गीतकार तभी लिखता है जब उसके वातावरण में या उनके जीवन में उन शब्दों के बोल सक्रिय रूप में विद्यमान होता है, जिसे वह जीता है, महसूस करता है, रचा–बसा और घुला मिला होता है। उसके जीवन के कण–कण में समाया होता है, वही उसके आस–पास के जन–जीवन में परिलक्षित होता है।

संस्कृति, संस्कार से रूपाकार पाती है। मनुष्य को अपना जीवन निरंतर परिष्कृत और परिमार्जित करना पड़ता है। प्रकृति के साथ एकाकार होना होता है। प्रकृति के साथ हर क्षण जीवन को महसूस करता है। वही अनुभव उसके

जीवन में सुख–दुख के क्षण बनाते हैं, जिसे वह शब्दों में व्यक्त करता है बोलता है, गुनगुनाता है, गाता है, वाद्य के साथ संयोजित कर नाचता है, उत्सव मनाता है, वही उस के जीवन में संगीत का रस घोलता है। संस्कृति सभ्यता का आंतरिक रूप है। संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है, जिसे मनुष्य अपने परिवेश से प्राप्त करता है, जिसमें उसका पालन–पोषण होता है, इससे उसके आचार–विचार, रहन–सहन और व्यवहार निर्धारित होते हैं और उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। सभ्यता फूल और संस्कृति सुगंध है, इसके अनुभव से व्यक्ति शब्दों को गढ़ता है, व्यक्त करता है। संस्कृति एक प्रकार से जीवन जीने की शैली है। वह व्यक्ति को उसके परिवार, समाज, और देश से विरासत में मिलती है। छत्तीसगढ़ी संस्कृति बहुरंगी, बहुरूपी और बहुपक्षीय है।

छत्तीसगढ़ी–कुडुख़ के ये शब्दावली इसके उपयोग करने वालों के जीवन में उत्साह भरता है। कृषि का प्रभाव लोगों के जीवन में है, जिन्हें लोग कभी हाना, ददरिया के माध्यम से, तो कभी लोकोक्ति के माध्यम से, तो कभी गीतों के माध्यम से इसे व्यक्त करते हैं।

संदर्भ सूची

1. देवी, एन. गणेश, कर, चितरंजन. (2015). *भारतीय भाषा लोक सर्वेक्षण छत्तीसगढ़ की भाषाएँ,* नई दिल्ली, PLSI-7, Part I, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, पृ. 37.
2. वही, 24.
3. मजुमदार तथा टी.एन. मदान (1960):, *एन इंट्रोडक्शन टु सोशल एंथोपोलाजी* (प्रथम संस्करण), पृ. 14.
4. सूचक (कुडुख़) – श्री गोवर्धन उराँव, ग्राम–बीरसिंग पाली, जिला–महासमुंद, छत्तीसगढ़।
5. सूचक (कुडुख) – श्री भगत खेस, पत्थलगाँव, जशपुर, छत्तीसगढ़।

****